Subject - Philosophy
Class :- B.A, Part-III (Hons)
Paper-V

टोटमवाद
(Totemism)

टोटमवाद एक सिद्धांत है जो जाति तथा उसके पूर्वजों के बीच एक प्रकार की एकता तथा अपनापन का बोध कराता है। यह एक सामाजिक धारणा है। प्रोफेसर ब्राइट-मैन ने कहा है "टोटेमिज्म समान रूप से पूर्णव्यापी न होकर दूर तक फैला हुआ था तथा सामाजिक प्रधानता से पूर्ण था" यह अण्डमन द्वीपवासियों तथा दक्षिण अफ्रीका की झाड़ी जातियों (bush men) में नहीं दीखता है। टोटमवाद के मुख्य समर्थकों में रावर्टसन स्मिथ तथा जेवन्स का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

टोटेमिज्म में टोटम को पवित्र माना जाता है। टोटम पशुओं का एक वर्ग है जिसके साथ जाति का संबंध पाया जाता है। मुख्यतः भालू, कौवा, बाघ,

सर्प, बगुला, छिपकी टोटेमिज्म जैसी भावना का प्रतिनिधित्व करते थे। टोटमी की धारणा है कि हम सबों को सृजन एक सामान्य टोटम पशु से हुआ है।

टोटमवाद में विश्वास करने वाले को टोटमी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल के लोग वृक्ष की शाखा को भी टोटम का प्रतीक मानते थे तथा वे शाखाएँ भी उनके लिए पवित्र एवं उत्साहवर्द्धक थीं। टोटम - पशु का मांस खाना निषेध था।

फ्रायड का विचार है कि प्राचीन काल के लोगों को अपने पूर्वजों के प्रति प्रेम एवं घृणा की भावना थी। वार्षिकोत्सव के अवसर पर मांस का पानकर वे अपने पूर्वजों के प्रति घृणा का प्रदर्शन करते थे। जब टोटम पशु की मृत्यु होती थी तो आदिम मनुष्य उसे गाड़ दिया करते थे। उनकी मृत्यु के समय वे खेद प्रकट करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् वे उसी प्रकार

आँसू बहाते थे जिस प्रकार जाति के सदस्य की मृत्यु पर आँसु बहाते थे।

जो लोग पौधों को टोटम का प्रतीक मानते थे वे भी साल के अंत में ~~का~~ वार्षिकोत्सव मनाते थे। टोटम की पूजा नहीं की जाती थी इसलिए कुछ लोगों ने इसे धार्मिक वस्तु न मानकर सामाजिक वस्तु माना है उनके अनुसार टोटेमिज्म् को धर्म कहना अनुचित है। प्रो० गैलवे ने कहा है कि "टोटेमिज्म् धर्म न होकर सामाजिक रीति है।"

इसमें कोई संदेह नहीं किया जा सकता है कि टोटमवाद एक सामाजिक व्यवस्था है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि एक टोटमी को अपने वर्ग के टोटमी के साथ वैवाहिक संबंध कायम करने की अनुमति नहीं है। टोटमवाद के सिंहावलोकन से यह प्रमाणित होता है कि यह धर्म व्यवस्था है।

टोटमवाद को इसलिए धर्म

व्यवस्था कहा जा सकता है कि इसमें शुद्धता और अशुद्धता की भावना मिलती है। यह धार्मिक अनुभूति का आधार है। टोटमवाद में रहस्यमय शक्ति के प्रति श्रद्धा एवं विस्मय का भाव दिखता है।

प्रत्येक टोटमी टोटम पशु पर भरोसा करता है तथा संकटकाल में संकट निवारण के लिए उनसे वह प्रार्थनाएँ भी करता है। टोटमवाद धर्म है। टोटमवाद को इसलिए भी धर्म कहा जा सकता है कि इसमें पाप के प्रति प्रायश्चित की भावना प्राप्त होती है।

टोटमवाद को धर्म में समाविष्ट करने का प्रधान कारण यह है कि टोटमवाद में बलि पशु अंत में देवता का रूप ग्रहण करता है। संभवत: इसी कारण फ्रायड ने टोटमवाद से अनेकेश्वरवाद को विकसित माना है। उपयुक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि टोटमवाद

समाज व्यवस्था एवं धर्म व्यवस्था दोनों है।

टोटमवाद उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया में मुख्यतः प्रचलित है। टोटम धर्म से बलिदान की प्रथा का विकास हुआ है। पाप के प्रायश्चित की भावना तथा अंतः-शुद्धि की धारणाएँ टोटमवाद से विकसित हुए है। फ्रायड के अनुसार टोटमवाद यहूदी-धर्म और ईसाई धर्म में दिखता है। हिंदू धर्म में भी टोटमवाद की तरह पशुओं की आराधना का विषय माना जाता है।

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara